श्री स्कंद दंडकं

श्री स्कंद दंडकं

अयि जय जयांभोजिनीजानिडिंभोदयोद्यत् कुसुंभोल्लसत्फुल्ल दंभोपमर्दप्रवीण प्रभाधोरणीपूरिताशावकाश, वरानंदसांद्रप्रकाश, सहैवोत्तरंगीभवत्सौहृदावेशमीशान पंचाननी पार्वतीवक्त्रसंचुंब्यमाननांभोजषट्क, द्विषत्कायरक्तौघरज्यत्पृषत्क, स्वकीय प्रभु द्वादशात्म द्रढीयस्तमप्रेम धामायित द्वादशांभोज वृंदिष्ठ बंहिष्ठ सौंदर्य धुर्येक्षण, साधुसंरक्षण, निजचरण वंदनासक्त सद्वृंद भूयस्तरानंद दायिस्फुरन्मंदहासद्युतिस्यंद दूरीकृतामंदकुंद प्रसूनप्रभा कंदळीसुंदरत्वाभिमान, समस्तामरस्तोम संस्तूयमान, जगत्याहितात्याहितादित्यपत्याहित प्रौढ वक्षःस्थलोद्गच्छदास्रच्छटा धूमळ च्छाय शक्तिस्फुरत्पाणि पाथोरुह, भक्तमंदार पृथ्वीरुह, विहितपरिरंभ वल्लीवपुर्वल्लरी मेळनोल्लासितोरस्तट श्रीनिरस्ता चिरज्योतिराश्लिष्ट संध्यांबुदानोपमाडंबर, तप्तजांबूनद भ्राजमानांबर, पिंछभार प्रभामंडली पिंडिताखंडलेष्वासनाखंडरोचिः शिखंडिप्रकांडोपरिद्योतमान, पदश्रीहृत श्रीगृहव्रातमान, प्रथितहरिगीतालयालंकृते, कार्तिकेयार्तबंधो, दयापूरसिंधो, नमस्ते समस्तेश मां पाहि पाहि प्रसीद प्रसीद ||

कारुण्याम्बुनिधे समस्तसुमनः संतापदानोद्यत-
-स्फायद्दर्पभरासुरप्रभुसमूलोन्मूलनैकायन |
बिभ्राणः क्षितिभृद्विभेदनचणां शक्तिं त्वमाग्नेय मां
पाहि श्रीहरिगीतपत्तनपते देहि श्रियं मे जवात् ||

इति श्री स्कंद दंडकम् |